स्थापना वर्ष : 2002

महिला उच्च शिक्षा के प्रति समर्पित
पूर्वांचल की अग्रणी संस्था

विवरणिका

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय

(सम्बद्ध : महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

बैजलपट्टी, हरहुआ, वाराणसी-221002

सरस्वती वन्दना

श्वेत हंसवाहिनी माँ, ऐसा वरदान दो कि
जग में चतुर्दिक प्रकाश कर जाऊँ मैं
वाणी में भक्ति और लेखनी में शक्ति दो कि
ज्ञान की मशाल द्वार-द्वार पर जलाऊँ मैं
सत्यपथ पर ही चलूँ, किंचित् कभी न डिगूँ
आरती में दीपदान, तेरे बन जाऊँ मैं
कंचन थाल लिए, लोग ललचाएँ मुझे
पुष्प तेरे चरणों में, नीति के सजाऊँ मैं
पापियों के भार से, उदास हो रही धरा को
सप्तस्वर में गीत तेरी, वीणा के सुनाऊँ मैं
पुस्तिका के पृष्ठ पर, नाम तेरा ही लिखूँ मैं
जन-जन के हिरदय की, पीर हर जाऊँ मैं
भक्त तेरे हैं अनेक, पर मेरी तू ही एक
तेरे लिए चाँद का, चकोर बन जाऊँ मैं
आरती जहाँ हो तेरी, माँ तू ऐसा वर दे कि
यशगान में तिहारे, मोर बन जाऊँ मैं।

—डॉ० राघवेन्द्र नारायण सिंह

प्रबन्धक की कलम से...

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय के माध्यम से हमने नारी-सशक्तीकरण के लिए जिस ज्योति को प्रज्ज्वलित किया था वह निरन्तर अपने प्रकाश से वाराणसी के पश्चिमांचल को आलोकित कर रही है। समाज में महिलाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। स्त्री ही किसी बच्चे की प्रथम गुरु होती है इसलिए नारी का सुशिक्षित और सुसंस्कृत होना जरूरी है। परिवार, समाज और देश का विकास नारी की शिक्षा के बगैर लगभग असम्भव ही माना जाना चाहिए। सन् 2002 में स्थापित यह महाविद्यालय वर्तमान में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ से स्थायी मान्यता प्राप्त है। अपनी स्थापना काल से ही एक विशिष्ट पहचान के साथ राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज का अध्ययन केन्द्र भी स्थापित किया गया है। साथ ही स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ का भी अध्ययन केन्द्र महाविद्यालय द्वारा संचालित किया जा रहा है। जिसके माध्यम से छात्र-छात्राएँ स्नातक से लेकर स्नातकोत्तर तक की डिग्री हासिल करके देश की उन्नति में अपना योगदान दे रहे हैं।

हमारा लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना रहा है। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए महाविद्यालय में वह शैक्षणिक वातावरण निर्मित किया है जिससे छात्राएँ केवल पाठ्यक्रमगत शिक्षा ही नहीं अपितु संस्कारगत वैशिष्ट्य भी हासिल करके अपने जीवन के साथ-साथ पूरे समाज को एक नई रोशनी दे सकें। शिक्षा व्यवसाय के लिए आवश्यक है लेकिन उससे अधिक शिक्षा की भूमिका समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए है। सुशिक्षित प्राध्यापकों के द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न हो सकता है। अतः हमने शिक्षा की गुणवत्ता के लिए अपने विषय में निष्णात प्राध्यापकों को महाविद्यालय में वरीयता दी है। महाविद्यालय में छात्राओं के लिए एक समृद्ध पुस्तकालय की स्थापना के पीछे हमारी यही सोच रही है। अन्त में यही कहना चाहता हूँ कि हमने अपना सम्पूर्ण जीवन ही उच्च शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया है। राजेश्वरी महिला महाविद्यालय की स्थापना एक ऐसे शिक्षाविद् के द्वारा की गई है जिसने जीवन में शिक्षा, शिक्षण और ज्ञानवर्धन को ही अपने जीवन का ध्येय बनाया है।

आशा है आप हमारी इस मुहिम का स्वागत करेंगे और अपने सहयोग से हमारा निरन्तर उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

सादर,

आपका ही

डॉ० राघवेन्द्र नारायण सिंह

प्रबन्धक निदेशक

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय

मेरी नजर में

नहीं जानता कल क्या होगा, लेकिन इतना समझो लोगों
शिक्षा मन्दिर की नींवों में, चुन-चुनकर रखी हैं ईंटें
हमने बहुत बहुत मेहनत से, भवनों का निर्माण किया है
जिसमें फैल सके वह ज्योति, ज्ञान जिसे हम सब कहते हैं।
अपनी सारी शक्ति और, धन हमने श्रम से किया था अर्जित
वह सब कुछ करके अर्पित, इस शिक्षा मन्दिर को
हमने चाहा है बस इतना, पढ़ें यहाँ पर वे छात्राएँ
जिन्हें नहीं उनके अभिभावक, भेज हैं सकते उन जगहों पर,
जहाँ कभी वे पहुँच न सकते, क्योंकि अर्थ नहीं है इतना,
वे दे पाएँ शुल्क रूप में, यदि इच्छा है पूरी होती,
मेरी शिक्षित करने की, उन बालाओं महिलाओं को,
बहुत धन्य महसूस करूँगा, जन्म हमारा सुफलित होगा
और नहीं है इच्छा मेरी, अपनी कोई इस धरती पर!

कोई भी शिक्षा का मन्दिर, त्याग तपस्या की धरती पर
ही होता है विकसित क्रमशः, नन्हा बीज है कितना होता
उस प्रस्तृत वट महावृक्ष का, जिसकी महिमा नहीं जानता
कोई प्राणी जब वह छुपकर, रहता है उस बीजशक्ति में
हमने अपना कर्म किया है, जैसे कोई नन्हा दीपक
जलता है अति धीमी गति से, लेकिन दूर भगाता है वह
घनी रात में अन्धकार को, चाहे कितना हो वह गहरा।

नारी

नारी पूजन की सामग्री नहीं, सम्मान की अधिकारी है
वह महज गूँजती आवाज नहीं, काली की भयानक किलकारी है
उसने सबको प्रेम बाँटा है निश्चल होकर, उससे तुम भी निश्छल प्रेम करो
अपना सर्वोत्तम तत्व उसे भेंट करो, उसे देवी के सिंहासन से नीचे उतारकर
मनुष्य का सम्मान दो, उसको भावनाओं की नदी से उबारकर
उम्मीद की जमीन पर स्थान दो, उसको मनुष्य समझो
चुड़ैल या अप्सरा या पिशाचिनी नहीं, उसे इन्सानियत से भरी हुई आत्मा समझो
नर्क गामिनी या डाकिनी नहीं, हिकारत तुम्हारी आँख में है
उसके रूप में नहीं, तिजारत तुम्हारी फितरत में भरी है
उससे निकलती सुनहली धूप में नहीं।

—डॉ० राघवेन्द्र नारायण सिंह

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय

(सम्बद्ध : महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

बैजलपट्टी, हरहुआ, वाराणसी-221002

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय पूर्णतः नारी शिक्षा के प्रति समर्पित एक गौरवपूर्ण संस्था है। सन् 2002 में स्थापित एवं सन् 2013 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त यह महिला महाविद्यालय वाराणसी शहर के पश्चिमी अंचल में हरहुआ चौराहे के समीप वाराणसी-जौनपुर राजमार्ग पर स्थित है। परम समाजसेवी एवं शिक्षाविद् श्री चन्द्रमा सिंह द्वारा स्थापित यह महाविद्यालय महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ से सम्बद्ध है। इक्कीसवीं सदी निश्चित रूप से महिलाओं की सदी है। पढ़ी-लिखी महिला आज के युग की सबसे बड़ी जरूरत है क्योंकि महिला-शिक्षा से ही हम समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं भ्रष्टाचार जैसे दानवों को नष्ट करने में सफल हो सकते हैं। महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की सुप्रसिद्ध कविता 'वह तोड़ती पत्थर' भारतीय समाज में व्याप्त नारी-निरक्षरता पर तीव्र आघात करती है। निरालाजी ने गुलामी की जंजीरों में जकड़ी नारी की जड़ता एवं निरक्षरता के पत्थरों को तोड़ने का आह्वान किया था। इससे बड़ी और कौन-सी विडम्बना हो सकती है कि जिस देश में वेद-सूक्तों की रचयिता कभी स्त्रियाँ हुआ करती थीं तथा जहाँ पर कभी 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' का स्वर गुंजित होता था वहीं पर विश्व की सबसे बड़ी निरक्षर आबादी निवास करती है जिसमें महिलाओं का अनुपात पुरुषों की तुलना में बहुत अधिक है। हमारे राष्ट्रपुरुषों ने नारी-शिक्षा पर सर्वाधिक बल दिया था। राजा राममोहन राय, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सर सैयद अहमद खाँ, मदनमोहन मालवीय जैसे राष्ट्रभक्तों एवं चेतना सम्पन्न महापुरुषों ने अपने उद्बोधनों में नारी-शिक्षा की अनिवार्यता को रेखांकित किया था। हमारी परतन्त्रता ने हमें शेष विश्व से विकास की दौड़ में बहुत पीछे कर दिया। महिलाएँ आज भी अज्ञान एवं अन्धविश्वास के मकड़जाल में उलझी हुई हैं। महिलाओं की शिक्षा द्वारा ही सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक एवं आर्थिक मोर्चों पर विजयश्री प्राप्त की जा सकती है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए राजेश्वरी महिला महाविद्यालय की स्थापना की गयी जिससे महिला-शिक्षा की पूरे भारतवर्ष में जल रही मशालों में एक मशाल और जोड़ सकें तथा नारी-शिक्षा को और अर्थवान बनाने में यह महाविद्यालय अपना समग्र योगदान कर सकेगा।

संकाय-स्थिति

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में भाषा एवं कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी, समाजशास्त्र, संस्कृत, प्राचीन इतिहास, राजनीति विज्ञान, गृह विज्ञान एवं अंग्रेजी विषयों की स्नातक स्तर पर शिक्षण-व्यवस्था उपलब्ध है। कौशल विकास, सह-पाठ्यक्रम एवं सामान्य ज्ञान के लिए भी कक्षाएँ संचालित की जाती हैं। संकाय में उपलब्ध विषयों के शिक्षण हेतु अनुभवी एवं सुयोग्य प्राध्यापक/ प्राध्यापिकाओं की व्यवस्था है जिससे छात्राओं को विषय की सम्यक् एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सके। विषय-ज्ञान को और अधिक गम्भीरता प्रदान करने के लिए समय-समय पर लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वानों एवं शिक्षाविदों को अतिथि-व्याख्याता के रूप में बुलाने की भी व्यवस्था है। शिक्षा मानव-जीवन की सर्वोच्च आवश्यकता है। अतः छात्राओं को सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित न रखकर उनके व्यक्तित्व रूपान्तरण एवं उन्नयन हेतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण उपलब्ध कराना भी राजेश्वरी महिला महाविद्यालय की शिक्षण-व्यवस्था का अभिन्न अंग है।

दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्नातक से स्नातकोत्तर तक सभी विषयों की शिक्षा उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद एवं स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ के अध्ययन केन्द्रों के द्वारा संचालित की जाती है।

पुस्तकालय

महाविद्यालय के पास अपना एक सुव्यवस्थित एवं विकसित पुस्तकालय है जिसमें समस्त विषयों की पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। पुस्तकालय से सभी छात्राएँ सुविधानुसार पुस्तकें ले सकती हैं। पुस्तकों को सत्र के अन्त में पुस्तकालय में वापस करना अनिवार्य है। यदि पुस्तकों को क्षति पहुँचती है, जैसे कि पृष्ठ कटे पाये जाते हैं या अनावश्यक रूप से उन्हें गन्दा किया जाता है तो पुस्तकालयाध्यक्ष के विवेकानुसार छात्रा से अर्थदण्ड लेने का विधान है। विषय की पुस्तकों के अतिरिक्त सामान्य ज्ञान एवं सामान्य अध्ययन की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं जिनके अध्ययन से छात्राएँ अपने आपको प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार कर सकती हैं।

अनुशासन

छात्राओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे महाविद्यालय में अनुशासन बनाए रखेंगी। सभी छात्राओं को महाविद्यालय के प्राचार्य और प्राध्यापक/प्राध्यापिकाओं द्वारा दिये गये निर्देशों का कार्यवाही पालन करना अनिवार्य होगा। यदि छात्रा को अध्यापन-कार्य के समय आवश्यक कार्य हेतु बाहर जाना है तो उसे अनुमति लेनी आवश्यक होगी। ऐसा न करने की स्थिति में अनुशासनात्मक कार्यवाही होगी। जिसमें अर्थदण्ड/ चेतावनी/ निष्कासन जैसे प्राविधान सम्मिलित होंगे। अनुशासन के प्रत्येक मामले में प्राचार्य का निर्णय अन्तिम रूप से होगा। परिसर में मोबाइल पर गाना सुनना या अनावश्यक बातचीत करने पर प्रतिबन्ध है। यथासम्भव मोबाइल को शान्त-मोड में ही रखें जिससे पठन-पाठन में व्यवधान न हो।

भवन

महाविद्यालय के पास वर्तमान में अपना एक मानक-आधारित भवन है जिसमें आठ बड़े-बड़े व्याख्यान कक्ष, पुस्तकालय, वाचनालय, गर्ल्स कॉमन हॉल, प्रसाधन कक्ष, प्राचार्य कक्ष, प्राध्यापक कक्ष की व्यवस्था है। महाविद्यालय का परिसर निरन्तर विकसित किया जा रहा है। महाविद्यालय के मास्टर-प्लान में ऑडिटोरियम, जिमनॉजियम और अन्य नये आयामों को जोड़ने की व्यवस्था है जिससे कि एक ही परिसर में विश्वविद्यालयों जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हो सकें।

महाविद्यालय वार्षिक-पत्रिका

महाविद्यालय प्रतिवर्ष एक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करता है। पत्रिका में अध्ययनरत छात्राओं और प्राध्यापक/प्राध्यापिकाओं के लेखों, कविताओं, कहानियों तथा शोध-पत्रों का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में प्रकाशनार्थ दी गई लेखन-सामग्री पूर्णत: मौलिक होनी चाहिए। यदि कोई प्रकाशित सामग्री मौलिक नहीं होगी तो उसके लिए उसका लेखक ही पूर्णरूपेण जिम्मेदार होगा। पत्रिका में विशिष्ट अतिथि-लेखकों के लेख एवं विचार भी प्रकाशित किये जाते हैं जिससे महाविद्यालय की छात्राएँ उनकी प्रेरणा ग्रहण अपने जीवन एवं विचारों में आवश्यक परिवर्तन ला सकें।

वाहन-सुविधा

महाविद्यालय छात्राओं के आवागमन को सरल और सहज बनाने के प्रति अत्यधिक सचेत है इस हेतु वर्तमान में महाविद्यालय के पास बस भी उपलब्ध है जिसके द्वारा छात्राएँ उचित शुल्क पर अपने वाहन सम्बन्धी परेशानियों का निराकरण कर सकती हैं।

प्रवेश प्रक्रिया

स्नातक कक्षाओं में प्रवेश हेतु महाविद्यालय कार्यालय से आवेदन-पत्र प्राप्त करके छात्राएँ घोषित अन्तिम तिथि तक प्रवेश ले सकती हैं। यदि आवेदन-पत्र अधूरे हैं या उनमें वांछित सूचनाएँ गलत दी गयी हैं या जान-बूझकर तथ्यों को संज्ञा में नहीं दिया गया हो तो ऐसे आवेदन-पत्रों को निरस्त कर दिया जाएगा तथा यदि प्रवेश ले लिया गया है तो ऐसी छात्राओं के प्रवेश रद्द कर दिये जाएँगे। यदि निर्धारित सीटों से अधिक आवेदन-पत्र प्राप्त होते हैं तो महाविद्यालय प्रवेश-परीक्षा का आयोजन कर सकता है। ऐसी स्थिति में न्यूनतम निर्धारित अंकों से अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को ही प्रवेश दिया जाएगा। सामान्यत: प्रवेश मेरिट आधार पर लिया जाएगा परन्तु प्रवेश के सम्बन्ध में प्राचार्य का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। शासन द्वारा निर्धारित आरक्षण प्रवेश-सम्बन्ध में लागू होगा।

शुल्क

महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय अधिनियम की नियमावली में उल्लिखित प्रावधानों के अन्तर्गत शुल्क निर्धारित है। यदि यह संज्ञान में आता है कि कोई छात्रा मेधावी परन्तु आर्थिक स्तर पर कमजोर है तो उसे शुल्क में विशेष रियायत दी जाती है। समाज के गरीब, कमजोर, उपेक्षित श्रेणी से आने वाली छात्राओं के शुल्क की पूर्ति महाविद्यालय अपने स्त्रोतों से करता है जैसा कि महाविद्यालय के उद्घोषित लक्ष्यों में निहित है।

स्वास्थ्य-रक्षा-केन्द्र

महाविद्यालय में छात्राओं का नियमित स्वास्थ्य-परीक्षण किया जाता है। उनके स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याओं के निदान के लिए एक सुयोग्य एवं अनुभवी चिकित्सक की नियुक्ति की गई है। छात्राएँ स्वास्थ्य केन्द्र पर स्वास्थ्य परीक्षण से सम्बन्धित सभी विषयों पर सलाह ले सकती हैं। आकस्मिक घटनाओं के लिए विशेष रूप से व्यवस्था की गई है।

परीक्षा प्रणाली

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ से सम्बद्ध राजेश्वरी महिला महाविद्यालय उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय अधिनियम की विनियमावली में उल्लिखित नियमों और प्रावधानों के अन्तर्गत परीक्षाएँ सम्पन्न कराता है। परीक्षाफल भी विश्वविद्यालय द्वारा ही घोषित किया जाता है। यदि किसी छात्रा की उपस्थिति विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित आवश्यक उपस्थिति (75 प्रतिशत) से कम होती है तो उसे परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी। हर स्थिति में प्राचार्य का निर्णय अन्तिम होगा।

छात्र-कल्याण कोष

छात्र-कल्याण कोष के अन्तर्गत महाविद्यालय ऐसी छात्राओं के शिक्षण शुल्क, पुस्तक-व्यय की जिम्मेदारी वहन करता है जो आर्थिक रूप से अक्षम हैं। ऐसी छात्राओं के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं से भी आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी जाती है। अत्यधिक मेधावी छात्राओं के प्रोत्साहन हेतु विशेष छात्रवृत्तियों को प्रबन्ध तन्त्र उपलब्ध कराता है।

खेलकूद

महाविद्यालय में खेलकूद सम्बन्धी समस्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हॉकी, क्रिकेट, बैडमिण्टन, वॉलीबॉल, फुटबॉल और अन्य इनडोर तथा आउटडोर खेलों के प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध है।

शैक्षिक गतिविधियाँ

राजेश्वरी महिला विश्वविद्यालय सत्र-पर्यन्त शैक्षणिक गतिविधियों से ओत-प्रोत रहता है। महाविद्यालय छात्राओं को सभी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की सूचनाओं से सम्पन्न कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इस हेतु समय-समय पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, खेल-कूद प्रतियोगिताएँ, क्विज प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जाती हैं जिससे छात्राओं में स्वाभाविक रूप से व्यक्तित्व उन्नयन के प्रति चेतना विकसित हो। महाविद्यालय में सामाजिक-शैक्षणिक जगत से सक्रिय रूप से जुड़ी विभूतियों को भी समय-समय पर छात्राओं के उचित एवं सम्यक् मार्गदर्शन के लिए आमन्त्रित किया जाता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय
जन्मदिवस समारोह
बुधवार, 25 सितम्बर, 2019
वर्तमान सन्दर्भ में
पं. दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक जीवन-दर्शन
आयोजक : राजेश्वरी महिला महाविद्यालय

'विश्व नारी अभ्युदय संगठन
संवर्धन में शिक्षकों

के संयुक्त तत्वावधान
सामाजिक मूल्यों के संवर्धन

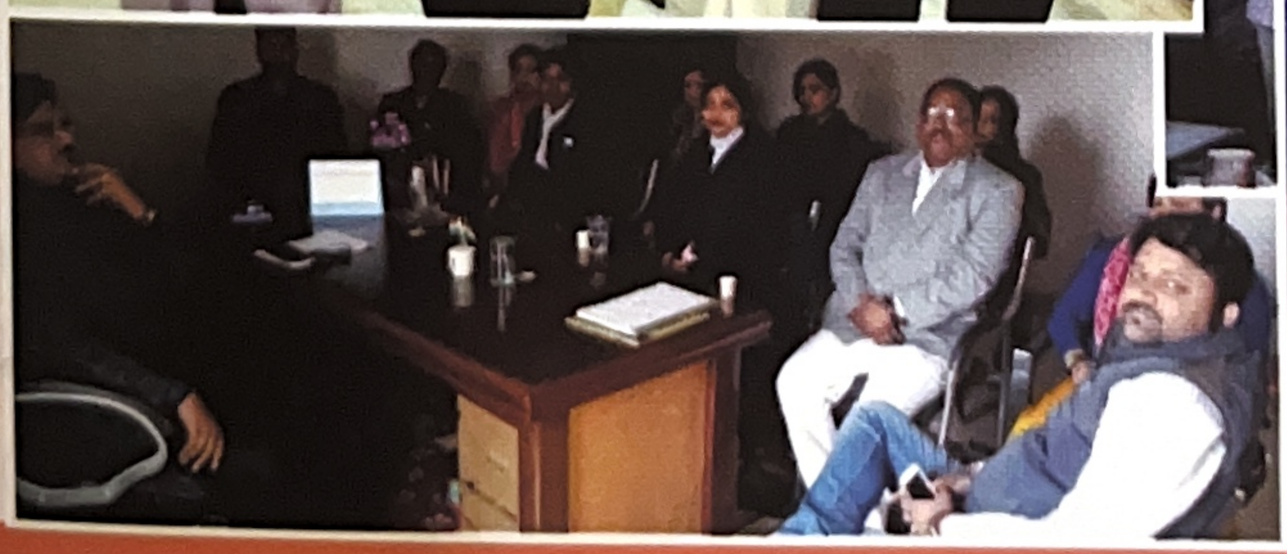

वर्तमान समय मे
साहित्य की उप

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन

हरहुआ (वाराणसी)। बैजलपट्टी राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में शुक्रवार को वर्तमान परिवेश में दिनकर का साहित्य विषय पर संगोष्ठी हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ बाबू राम त्रिपाठी, हिन्दी विभागाध्यक्ष हिन्दी निकेतन इन्स्टीट्यूट ने की। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि डॉ रामसुधार सिंह विशिष्ट अतिथि डॉ उमेश प्रसाद सिंह ने किया। कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन डॉ गायत्री माहेश्वरी ने करते हुए कहा कि दिनकर का साहित्य आज का साहित्य है और आज के संदर्भ में उसकी उपयोगिता और बढ़ गई है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ बाबू राम त्रिपाठी ने दिनकर के साहित्य को समग्रता का साहित्य बतलाते हुए दिनकर की कविताओं को आज के संदर्भ में बहोत ही समीचीन बतलाया। डॉ उमेश प्रसाद सिंह जी दिनकर के साहित्य को आज के समाज में बहोत उपयोगी बतलाते हुए उनपर और भी शोध की जरूरत बतलाया। उसी कड़ी में उप प्रबंधक अंशुमान सिंह ने छात्राओं को बताया कि अगर पढ़ाई लिखाई मे रुकावट आये तो हम पूरा सहयोग करेंगे।

प्रेमचंद ने कहा

बड़ागांव। राजेश्वरी
प्रेमचंद विषय पर गो
वक्ता प्रसिद्ध साहित्य
शुरुआत करते हुए
उन्होंने कहा कि प्रे
मुक्त करते हुए आ
प्रबंधक डॉ. राघवें
उनके साहित्यिक
सुरभि श्रीवास्तव

राजेश्वरी म

बड़ागांव। क्षेत्र
समारोह मनाय
कांत सिंह ने
में योगदान
धमाल मच
का संचाल

वर्तमान समय में दिनकर के साहित्य की उपयोगिता बढ़ी

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन

संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते वक्ता।

हरहुआ (वाराणसी)। बैजलपट्टी राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में शुक्रवार को वर्तमान परिवेश में दिनकर का साहित्य विषय पर संगोष्ठी हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ बाबू राम त्रिपाठी, हिन्दी विभागाध्यक्ष हिन्दी निकेतन इन्स्टीट्यूट ने की। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि डॉ रामसुधार सिंह,विशिष्ट अतिथि डॉ उमेश प्रसाद सिंह ने किया। कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन डॉ गायत्री माहेश्वरी ने करते हुए कहा कि दिनकर का साहित्य ओज का साहित्य है और आज के संदर्भ में उसकी उपयोगिता और बढ़ गई है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ बाबू राम त्रिपाठी ने दिनकर के साहित्य को समग्रता का साहित्य बतलाते हुए दिनकर की कविताओं को आज के संदर्भ में बहोत ही समीचीन बतलाया। डॉ उमेश प्रसाद सिंह जी दिनकर के साहित्य को आज के समाज में बहोत उपयोगी बतलाते हुए उनपर और भी शोध की जरूरत बतलाया। उसी कड़ी में उप प्रबंधक अंशुमान सिंह ने छात्राओं को बताया कि अगर पढ़ाई लिखाई मे रुकावट आये तो हम पूरा सहयोग करेंगे।

इस अवसर पर डॉ राघवेन्द्र नारायण सिंह के दो उपन्यासशरविक्षोभर और र रास्ते कभी खत्म नहीं होतेर का विमोचन किया गया। संगोष्ठी में अनेक महाविद्यालयों के शिक्षकों ने हिस्सा लिया।संगोष्ठी का संचालन डॉ सुरभि श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद डॉ राघवेन्द्र नारायण सिंह ने किया।

घाट पर सफाई कराने की मांग

वाराणसी। रानीघाट, तेलियाबाग, गोलाघाट आदि घाटों पर व्याप्त गंदगी, मलबा आदि समस्याओं कोदेव दीपावली से पूर्व कराने की 16 नवम्बर को हुई। जिसमें बागीश दत्त मिश्र, राजकुमार साहनी, अमरनाथ त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में परिचय समारोह

[illegible]

पुस्तक का हुआ विमोचन

[illegible]

[illegible]

महिला महाविद्यालय में विदाई समारोह

बड़ागांव/वाराणसी। स्थानीय क्षेत्र के राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में शुक्रवार को स्नातक तृतीय वर्ष की छात्राओं का विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त न्यायिक अधिकारी सूर्यकान्त सिंह, विशिष्ट अतिथि स्वर्णिम पब्लिक स्कूल के निदेशक धीरेन्द्र कुमार थे। अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक डॉ. राघवेन्द्र नारायण सिंह ने की। मुख्य अतिथि सूर्यकांत सिंह व विशिष्ट अतिथि धीरेन्द्र सिंह थे। इस मौके पर प्रबंध निदेशक डॉ. राघवेन्द्र नारायण सिंह, डॉ. सुरभि श्रीवास्तव, उपप्रबंध निदेशक अंशुमान सिंह आदि मौजूद थे।

लौहपुरूष से परिचित हुई छात्राएं

varanasi@inext.co.in

VARANASI (31 Oct.): सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती व राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर गुरुवार को राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में सेमिनार का आयोजन किया गया. प्रबंध निदेशक व साहित्यकार डॉ. राघवेंद्र नारायण सिंह ने स्टूडेंट्स को सरदार पटेल के बारे में जानकारी दी. इस मौके पर स्कूल के टीचर्स व स्टूडेंट्स ने भी अपना विचार प्रकट किया. उपनिदेशक अंशुमान सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया. कार्यक्रम में डॉ. एके सिंह, डॉ. शालिनी नाग, डॉ. बेबी सोनकर, श्वेता सिंह, डॉ अख्तर अहमद मौजूद रहे.

दिनकर ने जाति व वंशवाद पर की

राष्ट्रकवि की जयंती पर राजेश्वरी महाविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित

महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में शामिल छात्राएं।

हरहुआ (वाराणसी)। विकास खण्ड के हरहुआ बैजलपट्टी के राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में राष्ट्रकवि दिनकर जयन्ती पर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक साहित्यकार डॉ राघवेन्द्र नारायण सिंह थे। उन्होंने दिनकर जी को हिन्दी साहित्य के स्तम्भ साहित्यकारों में शुमार करते हुए उनको कृतित्व और व्यक्तित्व की विशेष चर्चा की। डॉ राघवेन्द्र नारायण सिंह ने दिनकर जी की 61 वी प्रकाशित पुस्तकों में पद्य गद्य विधा में सभी पुस्तकों पर रोशनी डालते हुए कहा कि दिनकर जी की सामयिक महत्व इसलिए और भी अधिक हो गया है क्योंकि राष्ट्रवाद आज एक गंभीर विषय है। दिनकर का राष्ट्रवाद सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। वे पौराणिक पात्रों के माध्यम से जीवन मूल्यों को जनमानस में प्रतिस्थापित करने में सफल होते हैं। कर्ण जैसे उपेक्षित चरित्र को मुख्यधारा में लाकर उन्होंने जातिवाद वंशवाद पर गहरी चोट की। वे मूल्यों के साहित्यकार हैं। डॉक्टर ए के सिंह, डॉ शालिनी नाग,आरज सिंह, डॉ बेबी सोनकर, इकबाल व्यादि लोग मौजूद रहे। वहां का संचालन डॉ सुमन सिंह धन्यवाद ज्ञापन उपप्रबन्धक सिंह ने किया।

महिलाएं अधिकारों को समझें

बड़ागांव। राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में मंगलवार को नारी सुरक्षा और सशक्तीकरण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ. राघवेन्द्र सिंह ने की। मुख्य अतिथि सीओ बड़ागांव शफीक अहमद खान ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए डायल 100 और 1090 नंबर उपलब्ध कराये गए हैं। उन्होंने महिला सुरक्षा संबंधित सभी कानूनी धाराओं को बताया।

प्रेमचंद ने कहानियों को आम जनता से जोड़ा

बड़ागांव। राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में हिंदी कहानी का विकास और प्रेमचंद विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामसुधार सिंह ने हिंदी कहानी 'इंदुमती' से शुरुआत करते हुए प्रेमचंद के पूर्व लिखी गई कहानियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने कहानी को चमत्कार और मनोरंजन के प्रभाव से मुक्त करते हुए आम जनता से जोड़ दिया। इससे पहले महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ. राघवेंद्र नारायण सिंह ने रामसुधार सिंह का स्वागत करते हुए उनके साहित्यिक जीवन का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुरभि श्रीवास्तव ने तथा धन्यवाद ज्ञापन उपप्रबंधक अंशुमान सिंह ने किया।

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में फेयरवेल

बड़ागांव। क्षेत्र के राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में शुक्रवार को फेयरवेल समारोह मनाया गया। मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त मुख्य न्यायिक अधिकारी सूर्य कांत सिंह ने कहा कि छात्राएं शिक्षा के महत्व को समझें और राष्ट्र के निर्माण में योगदान के लिए आगे आएं। समारोह में छात्राओं ने फिल्मी गीतों पर जमकर धमाल मचाया। प्रबंध निदेशक डॉ. राघवेंद्र नारायण सिंह मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ सुरभि श्रीवास्तव और धन्यवाद ज्ञापन अंशुमान सिंह ने किया।

राजेश्वरी महाविद्यालय में विदाई समारोह

हरहुआ। स्थानीय क्षेत्र के अन्तर्गत बैजलपट्टी स्थित राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में शुक्रवार को स्नातक तृतीय वर्ष को छात्राओं का विदाई समारोह सम्पन्न हुआ। प्रबंध निदेशक साहित्यकार डा. राघवेन्द्र नारायण सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। महाविद्यालय की छात्राओं ने धमाल के साथ रंगारंग कार्यक्रम में नृत्य गायन की अद्भुत छटा बिखरते हुए मनमोहक प्रस्तुति दी। डा. सिंह ने महाविद्यालय की छात्राओं का परिचय देते हुए उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए महाविद्यालय की उपलब्धियों की चर्चा की। उन्होंने छात्राओं को अपनी प्रतिभा को समाज के सामने लाने की आवश्यकता पर बल दिया। संचालन डा. सुरभि श्रीवास्तव व उप प्रबंधक अंशमान सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में नारी सुरक्षा व सशक्तिकरण पर कार्यशाला

पिण्डरा/वाराणसी। राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में नारी सुरक्षा और सशक्तीकरण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक डॉ. राघवेन्द्र नारायण सिंह ने किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि क्षेत्राधिकारी बड़ागांव शफीक अहमद खां थे। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री खान ने महाविद्यालय की छात्राओं को सामाजिक व कानूनी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की नारी अबला नहीं है। उसे सरकार द्वारा सुरक्षा के सभी कानूनी इंतजाम मुहैया कराए गए हैं। 100 व 1090 जैसे फोन नम्बर पर डायल करके तुरंत सुरक्षा के लिए पुलिस को बुलाया जा सकता है। आपने महिला सुरक्षा संबंधित सभी कानूनी धाराओं का विस्तार से वर्णन किया और निहत्थाओं को किसी भी परिस्थिति का मुकाबला करने का आह्वान किया।

उन्होंने पुलिसबल, अदालतों, प्रशासन जैसे विभागों में महिलाओं के आगमन को शुभ बताते हुए छात्राओं को इन सभी विभागों में आने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंध निदेशक डॉ राघवेन्द्र नारायण ने भी छात्राओं को निडर होकर अपने अधिकार का प्रयोग ररके नये भारत का निर्माण करने के लिए आगे आने को कहा। इस अवसर पर सभी प्राध्यापक कर्मचारी और छात्राएं उपस्थित रहे।प्रबंध निदेशक डॉ. राघवेन्द्र नारायण ने श्री शफीक अहमद खां का अंगवस्त्रम व स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुरभि श्रीवास्तव व धन्यवाद ज्ञापन उप प्रबंध निदेशक अंशुमान सिंह ने किया।

लक्ष्मीबाई नारी अस्मिता की प्रतीक

हरहुआ। बैजलपट्टी स्थित राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में गणेशोत्सव एवं संस्कृति भारती के संयुक्त तत्वाधान में सामाजिक समरसता, जागरण एवं प्रश्नोत्तर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस संस्थान की ओर से युवा पीढ़ी को जागृत करने का काम कई वर्षों से लगातार जारी है। इस वर्ष नारी अस्मिता की पहचान रानी लक्ष्मीबाई के जीवन से जुड़ी तमाम भ्रांतियों पर चर्चा हुई। संस्कृति भारती के संयोजक डा.उपेंद्र विनायक ने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई से जुड़े तथ्यों को अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करना अनुचित है। महाविद्यालय के प्रबंधक डा.राघवेंद्र नारायण सिंह ने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई नारी अस्मिता की पहचान हैं। डा.अनीता सिंह, डा.रचना डा.सुरभि आदि रहीं।

रामचरितमानस मानस विश्व का बेजोड़ महाकाव्य

हरहुआ। क्षेत्र के बैजलपट्टी स्थित राजेश्वरी महिला महाविद्यालय में चल रहे श्री रामचरितमानस का अखंड पाठ का शनिवार को समापन हुआ। इस अवसर पर श्री रामचरितमानस का वर्तमान संदर्भ और श्रीराम का चरित्र विषय पर एक संगोष्ठी भी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रोफेसर डाक्टर मायाशंकर पांडेय, अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग ने किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रोफेसर राम कीर्ति शुक्ल, पूर्व प्रोफेसर अंग्रेजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय थे। विषय प्रवर्तन सुप्रसिद्ध समालोचक डॉ रामसुधार सिंह ने किया। इस अवसर पर रामसुधार सिंह ने विषय प्रवर्तन करते हुए रामचरितमानस को विश्व का वह प्रथम महाकाव्य बतलाया जिसका पाठ एक साथ किया जाता है। डॉ रामकीर्ति शुक्ल ने रामचरितमानस को वह अद्भुत ग्रंथ बतलाया जिसमें हर व्यक्ति के लिए कुछ न कुछ खास संदर्भ सकलित है। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के प्रबंध निदेशक डाक्टर राघवेन्द्र नारायण सिंह ने किया। संगोष्ठी में डाक्टर राघवेन्द्र नारायण सिंह की दो पुस्तकों 'बुक आफ गॉड' एवं 'गीतांजलि : एक पुनः पाठ' का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के संरक्षक प्रोफेसर इन्द्रासन सिंह ने किया।